हिमाचली संस्कृति के दो फाड़ होने के खतरे

हमारा समय इतनी तेजी से बदल रहा है कि बदलाव की नब्ज को पकड़ना आसान नहीं। फिर भी अगर आंख कान खुले हों, और घनघोर वर्तमान के पार देख पाने का हुनर हो तो अंदाजा तो लगाया ही जा सकता है कि हमारे समाज की चाल क्या है। परिवर्तन की जो पदचाप सुनाई पड़ती है, वह भविष्य की किस डगर पर ले जाएगी, यह तो कहना मुश्किल है लेकिन इतना तय है कि हमारा समाज तेजी से, बड़े परिवर्तन की तरफ बढ़ रहा है। बैंकिंग कार्मिक चयन संस्थान के ग्रुप हेड प्रोफैसर ***मदन दत्त*** *हाल ही में कुछ दिन हिमाचल में देहरा में अपने घर रह कर आए। वहां उन्होंने जो देखा, वो कुछ यूं बयान किया:*

- देहरा की एक लड़की होशियारपुर में बैंक में काम करती है और रोज आती जाती है। पहले प्रोग्राम बनाकर होशियारपुर या जालंधर जाना होता था।
- गांव में लड़के अब कम दिखते हैं। बहुत से औद्योगिक क्षेत्र बद्दी में काम पर लग गए। मां-बाप को चैन है कि खाने लायक कमाने तो लगे। यह अलग बात है कि पीछे गांव में अब बीवी-बच्चे और बुजुर्ग ही रह गए। सवाल यह है कि अब खेती कौन करे? क्या खेती-बाड़ी के दिन गिनती के हैं?
- गांव के एक बुजुर्ग लुदरु बाबा के वृद्धाश्रम में मिल गए। कहने लगे मैं छड्डी आया सब कुछ। बाल बच्चे जैसे चाहे रहें। मैं तो यहीं ठीक हूं। हिमाचल में वृद्धाश्रम बनने का मतलब है परिवार नामक संस्था में कुछ भारी फेरबदल होने वाला है।
- गांव में जमीन के बंटवारे से परिवारों की जमीन कम होती दिख रही है। संयुक्त परिवार बड़ी तेज गति से टूट रहे हैं। पहले जिन परिवारों को बड़ा जमीन मालिक जाना जाता था अब थोड़ी जमीन से ही काम चला रहे हैं, वह भी जमीन एक जगह इकट्ठी न रह कर अलग अलग बिखरी हुई है। तो क्या खेती पर इसका असर आने वाले समय में पड़ता दिख नहीं रहा है?
- गांव में उपभोक्ता चीजों की खपत बढ़ रही है। घर में आटे तथा दाल पीसने की चक्की लगभग गायब हो गई है। वीडियो वाले गांव में पहुंच गए हैं। मोबाइल होना स्टेटस सिम्बल की बजाय जरूरत की वस्तु बनता जा रहा है। यहां तक कि कथा में आने के लिये न्योता मोबाइल से दिया जा रहा है।
- बरसात में छलियाँ, भूनना, लोगों के आम चुराना, रात को आम के पेड़ के नीचे आम बीनना अब तो किसी पुरातन कहानी जैसा लग रहा है। नजदीकी बाजार से सब समान खरीदा जा रहा है।
- एक ओर यह सब बातें प्रगति की ओर इशारा कर रही हैं परन्तु एक सावधानी से हिमाचल सचेत रहे कि इसका प्रसार सभ्यता और संस्कृति को तो उजाड़ ही रहा है पर बड़ा डर यह है कि उपभोक्तावाद के इस बहाव में वृद्ध तथा बच्चे यदि न देखे गये तथा युवा पीढ़ी कर्ज के जाल में यदि फंस गई तो हिमाचली संस्कृति दोफाड़ हो जाएगी। एक वह हिमाचल जो आधुनिकता और भौतिकवाद की ओर बढ़ता दिखेगा, दूसरा वह हिमाचल जो गाँव की टूटती संस्कृति और अर्थव्यवस्था में चरमरा जाएगा।

यह पन्ना आपके लिए सुरक्षित

अगर आप भी हिमाचल हो के आए हैं या वहीं रह रह हैं या देश दुनिया के किसी हिस्से में हो के आए हैं और परिवर्तन की पदचाप सुन रहे हैं तो अपने विचार और अपना चित्र हमें भेजिए।